

नगरीकरण, वनोन्मूलन एवं समाज : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
(URBANIZATION, DEFORESTATION AND SOCIETY: A
SOCIOLOGICAL STUDY)

सार(Abstract)
लघु शोध प्रबंध (M.Phil.)
(2020-2022)



पर्यवेक्षक
प्रो. मनीष के. वर्मा
समाजशास्त्र विभाग

शोधार्थी
पूजा त्रिपाठी
Enroll No. 1226/20

अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ 226025

नगरीकरण, वनोन्मूलन एवं समाज : एक समाजशास्त्रीय

अध्ययन

**(URBANIZATION, DEFORESTATION AND SOCIETY: A
SOCIOLOGICAL STUDY)**

प्रस्तावना

(Introduction)

वनों के विनाश को ही वनोन्मूलन कहा जाता है। वनों की कटाई का मानव जीवन और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है, पहाड़ी क्षेत्रों में वनों कटाई इतनी अधिक तीव्र है कि अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी बुरी तरह प्रभावित हो रही है एवं हिमालय की मूल वनस्पति को नष्ट किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का क्रमिक नुकसान हो रहा है। अधिक जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण एवं अन्य विकासात्मक गतिविधियों के कारण वनस्पति और जीवों के आवास परेशान व जीवित संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ता दिखाई

पड़ रहा है। अतः भारत की प्राकृतिक विविधता दुनिया में सबसे अमीर में से एक है जो अब धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। भारतीय समाज का एक प्रमुख आर्थिक आधार कृषि, जंगल एवं प्राकृतिक संसाधन है जिनमे जंगलों का विशेष महत्त्व है। अधिकतर भारतीय समाज इन्हीं संसाधनों पर निर्भर है। भारतीय समाज एक विकासशील देश है, जहाँ भिन्न-भिन्न रूपों में विकास को दिन-प्रतिदिन उन्नमुख किया जा रहा है। भारत की प्रगति हेतु कई आयामों पर कार्य किया जा रहा है जैसे- नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण एवं वनोन्मूलन आदि। परन्तु समकालीन स्थिति में इन विकासशील प्रक्रियाओं के फलस्वरूप कई दुष्परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं, जिनके कारण अनेक समस्याओं का जन्म हो रहा है। पर्यावरण से मानव समाज का सीधा सम्बन्ध है अर्थात् कह सकते हैं कि प्रकृति व मानव का सम्बन्ध जैसे एक शरीर का आत्मा से है। प्रकृति व पर्यावरण को महत्वपूर्ण समझते हुए भी मानव शहरीकरण जैसी प्रक्रिया को अंजाम देने हेतु इसका प्रतिदिन दोहन कर रहा है। मानव यह समझने लगा है कि ईश्वर प्रदत्त यह नैसर्गिक उपहार उपयोग के लिए ही दिए

गए हैं जिसके फलस्वरूप भोगवादी प्रवृत्ति का जन्म हुआ। अतः इसी प्रवृत्ति के कारण प्रकृति व वनों का अंधाधुंध शोषण हो रहा है व हरित पर्यावरण को नगरीकृत कर उन्हें औद्योगिकीकरण हेतु तैयार किये जाने का प्रयास लगातार हो रहा है। नगरीकरण एवं वनोन्मूलन ने व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वार्थ की ओर उन्मुख किया है जिसके कारण जंगल कटने लगे, नदियां मैली हो रहीं, जंगलों से जड़ी-बूटियां लुप्त होने लगी एवं समस्त पर्यावरण नष्ट होने की स्थिति में जा पहुंचा है।

वनोन्मूलन - इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार “वनोन्मूलन से तात्पर्य है कि मानव द्वारा वनों की कटाई करना, वनों को सीमित करना है। मानवीय जीवन में वनोन्मूलन का अनुमान परंपरागत रूप से उनके उपयोग के लिए किया गया कार्य है जिसमें लकड़ी के उत्पादों के लिए पेड़ों को काटने, फसल जोतने योग्य भूमि व चराई हेतु भूमि शामिल है” (Britanica, 2022)।

वनोन्मूलन मानव द्वारा जंगलों की कटाई तथा प्राप्त भूमि की साफ सफाई से कृषि योग्य भूमि बनाई जाती है। संसार में कई स्थानों पर

वनोन्मूलन बड़ी तेजी से हो रहा है, जिससे पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति पैदा हो रही है।

शहरीकरण- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार “शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें अधिक संख्या में लोग अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में रहने लगते हैं, ऐसे छोटे क्षेत्र शहर कहलाते हैं” (britanica, 2022)।

शोध समस्या

(Research Problem)

शहरीकरण हेतु वृहद स्तर पर वनोन्मूलन हुआ। जिससे ऑक्सीजन की कमी, मानव स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं एवं गरीबी जैसी बड़ी समस्याएं उभर कर सामने आई हैं। साथ ही तापमान में वृद्धि, दूषित जल की समस्याएं तथा वर्षा चक्र में असंतुलन उत्पन्न हुआ। जिससे कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा जैसी समस्याओं से समाज घिरा व ग्रसित है। जैव-विविधता, अपशिष्ट प्रबंधन, अपराध, बस्तियों का विस्तार, प्रदूषण आदि अन्य समस्याएं हैं। यद्यपि भारत सरकार ने वन संरक्षण अधिनियम 1980(1988 संशोधन) द्वारा ना केवल वनों की कटाई को रोकने वरन

इसके प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने की लगातार प्रयास कर रही है, बावजूद इसके वन संरक्षण के लक्ष्य प्राप्ति में तमाम बाधाएं बनी हुई हैं।

उद्देश्य

(Reseach objective)

1. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के कारणों को ज्ञात करना।
2. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के परिणामस्वरूप समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के कारण मानवीय स्वास्थ्य व पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शहरीकरण व वनोन्मूलन की कटाई से सम्बंधित सरकारी प्रबंधन, नीतियों तथा इसके प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

(Research Hypothesis)

1. शहरीकरण व वनोन्मूलन के कारणों के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव रहा है।
2. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के फलस्वरूप समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
3. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के परिणामस्वरूप मानवीय स्वास्थ्य तथा पर्यावरण को खतरा उत्पन्न हो रहा है।
4. शहरीकरण एवं वनों की कटाई के अंतर्गत सरकारी प्रयासों की उदासीनता प्रतिलक्षित हो रही है।

शोध-प्राविधि एवं डेटा स्रोत

(Research Methodology and Data Sources)

अध्ययन की प्रकृति व उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है जिससे अध्ययन

के सभी पहलुओं के बारे में सही तथ्य व जानकारी प्राप्त हो सके। इस अध्ययन में द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में कोविड के नियमों और प्रावधानों के कारण द्वितीयक स्त्रोतों में किताब, सरकारी दस्तावेज़ों, समाचार-पत्र, आलेख, पत्रिका तथा इस प्रकार के अन्य सामग्रियों का प्रयोग किया गया है।

जाँच-परिणाम

1. इस अध्ययन के प्रथम उद्देश्य शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के कारणों पर प्रकाश डालता है। अध्ययन का विश्लेषण के बाद यह पाया गया है कि प्रथम परिकल्पना शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के कारणों के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव रहा है। अतः यह परिकल्पना सत्य है।
2. शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के सन्दर्भ में समाज पर प्रभाव का अध्ययन इस शोध का द्वितीय उद्देश्य है। अध्ययन का पूर्ण विश्लेषण करने उपरान्त द्वितीय परिकल्पना जो यह बताती है कि शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के परिणामस्वरूप समाज पर इसका

नकारात्मक प्रभाव पद रहा है। अतः यह परिकल्पना सत्य साबित हुई।

3. इस अध्ययन के तृतीय उद्देश्य का अनुसार शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के कारण मानवीय स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त साहित्य एवं शोध-सामग्री का विश्लेषण करने के पश्चात तृतीय परिकल्पना जो यह बताती है की शहरीकरण एवं वनोन्मूलन के परिणामस्वरूप मानवीय स्वास्थ्य तथा पर्यावरण दोनों के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। अतः यह परिकल्पना भी सत्य साबित हुई।

4. अध्ययन के चतुर्थ उद्देश्य शहरीकरण एवं वनोन्मूलन की कटाई से सम्बंधित सरकारी नीतियां, प्रबंधन तथा इसके प्रभाव का अध्ययन करना है। प्राप्त आंकड़ों एवं स्रोतों का विस्तृत अध्ययन के बाद यह पाया गया है कि चतुर्थ परिकल्पना शहरीकरण एवं वनोन्मूलन की कटाई के अंतर्गत सरकारी प्रयासों की उदासीनता प्रतिलक्षित हो रही है। अतः यह परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

निष्कर्ष

समाजशास्त्र का उद्भव ही औद्योगिक क्रांति और फ्रांस की क्रांति से हुआ है, जो एक संरचनात्मक रूप से समाज में अमूल-चूल परिवर्तन का आधार रहा है। औद्योगिकीकरण ने समाज के सामाजिक-संरचना को उलट-पलट कर रख दिया है जिसका प्रतिबिम्ब इमाइल दुर्खीम की पुस्तक श्रम-विभाजन में हम देख सकते हैं जिसमें दुर्खीम ने श्रम-विभाजन को दो भागों में बाटा है, यांत्रिक व सावयव समाज। सावयव समाज(Organic Society) एक औद्योगिक समाज है, जिसके परिणामस्वरूप नगर अस्तित्व में आये।

भारत में औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण का अस्तित्व अंग्रेजों के आने के बाद आरंभ हुआ, जो कि शोषण पर आधारित था। अंग्रेजों के जाने के पश्चात् प्रथम पंचवर्षीय योजना 1956 में बनायी गयी जिसका केंद्र-बिंदु औद्योगिक विकास था, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर वनों की कटाई करके बड़े-बड़े उद्योग, कल-कारखाने, बिल्डिंगे आदि स्थापित किये गए। वनों की कटाई से दो तरह के नुकसान हुए पहला,

वहां के स्थानीय लोगों को प्रभावित किया जिनमें जनजाति, महिलाएं तथा कमज़ोर तबकों के अधिकांश लोग प्रभावित हुए।

दूसरा, नगरीकरण के पश्चात् गांव के बेरोज़गार लोगों को शहरों ने अपनी ओर आकर्षित किया, जिसमें पुश एवं पुल्ल कारकों ने इन्हे प्रभावित किया। जिसे समाजशास्त्र में ली का प्रवासन सिद्धांत के रूप में देखा जा सकता है।

लोग मुख्य शहर के खर्चीले जीवन-यापन को जीने में असक्षम है, परिणामस्वरूप यह शहर के (पेरी-फेरी) परिधि में निवास करने हेतु बाध्य हो गए। इसके साथ ही मलिन-बस्तियां अस्तित्व में आयीं एवं इन मलिन बस्तियों के आने के कारण अपराध, छिना-झपटी, बीमारियां आदि व्याधिकीय (Pathology) उत्पन्न हुई, जिसे हम दुर्खीम के शब्दों में व्याधिकीय-प्रकार्य कह सकते हैं।

समकालीन समाज में लोग/सरकार बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं जिसके लिए बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें, कल-कारखाने व सड़कों आदि का निर्माण बड़े पैमानों पर हो रहा है, जिसके कारण वर्षा का जल धरती अवशोषित नहीं कर पा रही है अतः जल-स्तर का संकट

विकराल रूप में शहरों उभर कर सामने आ रहा है, परिणामस्वरूप स्थानीय पारिस्थिकीय प्रभावित हो रहा है। शहरीकरण एवं वनोन्मूलन द्वारा पर्यावरण अधिक मात्रा में प्रभावित हो रहा है, जिससे पृथ्वी की भौगोलिक-स्थिति, जैव-विविधता, नदियां, झील एवं स्थानीय पेड़-पौधों को नुकसान हो रही है। बहुतायत नगरीकरण होने के कारण शहरों में जल-प्रदुषण, ध्वनि-प्रदुषण, वायु-प्रदुषण, घनी आबादी आदि की समस्याएं विकराल रूप धारण कर रही हैं जिसका नुकसान अधिकतर कमज़ोर वर्ग के लोगों पर पड़ रहा है, जिसमे बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे आदि शामिल है। अतः जब तक इस समस्या का समाधान नहीं किया जाता है, यह पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए हानिकारक साबित हो सकती है। वन वह स्रोत है जो पृथ्वी की जलवायु को संतुलित तरीके से बनाये रखने में मदद करता है। वनों की कटाई हमारी पृथ्वी में असंतुलित जलवायु व्यवहार का कारण बनेगी जिसमें मुख्य रूप शहरी करण एवं वनोन्मूलन का योगदान है।